सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | जनवरी-फरवरी, 2015

अपने जीवन के पात्र में तेल

परन्तु बुद्धिमानों ने अपने दीपकों के साथ कुप्पियों में तेल भी लिया। (यीशु, मत्ती 25:4)

जब एक आदमी यीशु के पास आता है , वह बुद्धि सीखता है। अपने पात्र में तेल लेकर जाना अक्लमंदी है। जब कोई व्यक्ति मसीह के पीछे चलने का दावा करता है , उसके पास तेल होना जरूरी है। अगर उसके पास तेल नहीं है तो वह आगे नहीं बढ़ेगा। और दूसरों की वृद्धि में बाधा डालता है। वह सही रास्ते से दूर भटक जाता है और दिशा बदलता है। अगर एक मन फिराया व्यक्ति नहीं फलता तो गंभीर रूप से कुछ गलत है। यह दिखाता है कि वह मसीह के साथ सही तरह से जुड़ा नहीं है। परमेश्वर ने तय किया कि नया आकाश और नई पृथ्वी हो। ज़कर्याह और मलाकी ने नबूवत की

हमारे लिए एक बालक ... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवार सुबह 7:30 से 8:00** बजे*

यीशु : उनकी अच्छाई और सुन्दरता

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता , और कैसी शोभा होगी! (ज़कर्याह 9:17)

प्राकृतिक सौंदर्य के कुछ अविश्वासनीय मनोरम दृश्यों को मैं ने देखा है। मगर दुनिया के अतिसुन्दर दृश्य भी आपको निरंतर मंत्रमुग्ध तो नहीं कर सकते।

यूरोप में जब सर्दियों में हिमपात होता है , तब जंगल और उसके खाली मैदान , पहाड़ी पक्षों और घास के मैदान सारे मानो बर्फ का एक स्वच्छ सफेद नकाब ओढे हों। मगर वही समय है जब सर्दी जुकाम और खांसी लोगों को सताती है। और आदमी उस सुन्दर बर्फ से भी ऊब जाते हैं और बसंत तथा गर्मी की राह देखते है।

मगर एक चीज है जिससे आप कभी नहीं उबोगे - यीशु का प्रेम। जिसने ने यीशु के प्रेम को चखा है उसे ऐसा लगाता है कि वह प्रेम दिन प्रति दिन अत्यंत अमूल्य और संतोषजनक होता जा रहा है।

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता और कैसी शोभी होगी !' जो अच्छा है सिर्फ वही फीका ना पड़ने वाला सौंदर्य हो सकता है।

प्राचीन यूनानी (ग्रीक) अपनी देवियों का मोहक शारीरिक सुंदरता से निवेशित चित्रांकित करते थे। मगर उनको यह कभी नहीं सूझा कि उनके देवता पवित्रता के बिना वास्तव में सुन्दर , कभी नहीं बन पायेंगे।

बारम्बार जब भी कवियों ने अपनी दिमागी काल्पनिक कृतियों को देवता कहने की कोशिश की है , मुख्यतः शक्तिशाली होने की विशेषता के बारे में ही उन्होंने सोचा है। मगर अत्यंत आवश्यक विशेषता जो पवित्रता है उसके बारे में उनके अधम मानवीय कल्पना से , वे कभी नहीं सोच पाये है। अलबत्ता उनको यह मालूम होना चाहिए था कि पवित्रता रहित देवता, देवता ही नहीं है।

केवल यीशु के नीचे भेजे जाने पर ही आदमी , परमेश्वर की पवित्रता को थोड़ा सा समझ पाया है।

आदमी और औरतें बुढ़ापे से डरते है। शारीरिक सुन्दरता खो जाने के डर से शोकित हैं। कुछ लोग मूर्ति के जैसे शरीर आयाम पाकर सर्वांगसुन्दर हो सकते है। मगर वह सुन्दरता कितनी देर तक रहने वाली है!

जब यीशु आपके जीवन में आकर , आपके भारी बोझ को हटाकर, आपके आँसू पोंछते है तब आपके जीवन से एक अनोखी सुंदरता चमकती है। यह बाह्य सौंदर्य नहीं, मगर यह दूसरों तक फैलकर प्रभावित करने वाली सुन्दरता है। अपनी यात्राओं के दौरान, कई सुन्दर लोगों से मेरी भेंट हुई है जो महान पवित्रता , धीरज और अनुग्रह से भरे आदमी और औरतें है।

मसीह द्वारा दिया गया सौंदर्य सालों बीतने के साथ-साथ

और बढ़ता है। परमेश्वर का भय मानने वाली एक स्त्री जिसके पीछे सही तरह से बिताई गई जवानी हो, वह अपनी बुढापे में भी ख़ूबसूरत लगती है। दुष्ट लोगों का दुःख, दुर्बलता और उनका खेद और पराजय बयान करने के लिए बहुत दर्दनाक है। और जब बूढ़े होने लगते हैं तो वे और अधिक कड़वाहट से भर जाते है। आतुर , उदास और चिड़चिड़े हो जाते है।

जीवन को एक पूरी अवधि के रूप में लिया जाना चाहिए। जवानी और प्रौढ़ता बहुत जल्दी गुजर जाते है। तनाव और दबाव जीवन पर भयानक हिसाब लेता है। मगर जिसके पाप यीशु के लहू में धुले है उसके लिए गहरी अंदरूनी शान्ति है। उसमें एक आंतरिक चमक है जो अपने शब्दों और कार्यों में बाहर जाहिर होता। वह अपने आप ही एक अनोखा शोभा है।

'आप सीधे अंदर आओ , प्रभु यीशु ये मेरा हृदय है। यह सब आपका है। अब तक वह आपके लिए सख्त बन्द था। मगर अब मेरे मन के साथ साथ मेरा जीवन भी आपका है। ' जब आप यीशु से ऐसा कहते हो , तब जो महान चमत्कार घटता है उसका वर्णन करना मुश्किल है। उसे मानव के मापदंड से नाप पाना कठिन है। उद्धार एक बढ़ता अनुभव है। - पहले जन्म लेना , नया जन्म, फिर बाद में बढ़ना। सामर्थ और प्रेम के बेहद खजाने खोजने, अपने वश में करने आपके सामने खुल जायेंगे।

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता, और कैसी शोभा होगी !' परमेश्वर ने जो मेरे साथ किया है वह देखकर मुझे अकसर अश्चर्य होता है। - एक पापी आदमी जिसकी कल्पनायें और विचार पापमय है। यीशु से अलग , निश्चित ही मेरे लिए कोई आशा ना थी।

एक दफा एक सपने से मैं उठ गया था। वह सिर्फ यही थाः मैंने सपने में देखा कि मैं परमेश्वर के रास्ते से किसी तरह फिसल गया हूँ। उस विचार से ही मेरा मन विचलित हो उठा। मुझ में ना तो सुन्दरता है और ना ही अच्छाई। जो मेरे पास है वह यीशु की ओर से है। उन्होंने मेरी सहज बदसूरती, नीचता और दुष्टता को अपने पाप रहित देह पर लिया है। मेरे स्थान पर मर कर मुझे सुन्दरता दी है। यीशु की सुन्दरता सदा बनी रहने वाली सुन्दरता है।

थ के-मांदे, घिसे पिटे परेशान, आनंद रहित उदासीन और दयनीय चहरे। शहरों के किसी भी उपनगरीय रेलों में , जब दफ्तर शाम को बन्द होते है तब आप उनको देख सकते हो। उनके चहरों पर खुशी का कोई नामो-निशान नहीं - सिर्फ तनाव। इस हालत में जब वे घर पहुँचते है तो वे निश्चित ही अपने इस तनाव , चिड़चिड़ेपन और उदासी से दूसरों को परेशान करते है। वास्तव में ऐसा लगता है कि उनके व्यक्तित्व में दबा हुआ मनोभावों का बम किसी भी वक्त फटने वाला है। वह सिर्फ नटखट बच्चे ही नहीं है जो जिद्दी और खुदगर्ज होते है ; आदमी और भी हठीले हो सकते है। - यीशु के अधीन ना होने पर पत्थर-दिल और अड़ियल बन सकते है।

एक आदमी जिसकी संगति और उपदेश मुझे बहुत आनंद पहुंचाता है, वो मन फिराने से पहले वह एक कुख्यात डाकू था। उसका जीवन इतना सुन्दर बन गया कि कई लोग उसको सुनने के लिए आकर्षित होते थे। जीवन जो इतना दुष्ट और स्वभाव जो इतना भ्रष्ट था, फिर भी ऐसी जिन्दगी पर प्रभु यीशु ने अपनी ही सुन्दरता को दिया। अपने सुन्दर उद्धारकर्ता के बारे में बोलने के लिए जब भी वह खड़ा होता, एक विशाल समूह इकट्ठा होता, और मग्न होकर ध्यान से उसको सुनते।

'ओह! उसकी कैसी सुन्दरता और कैसी शोभा होगी!'

दक्षिण भारत के पहाड़ों पर, एक दिन मैं एक दुकान में गया था। मेरी तरफ घूरती एक भयंकर आकृति। एक बाघ की तरह मुँह खोलकर दांत निकालते हुए गुरौती मुखाकृति। काउंटर पर उस आदमी को देखकर मैं ने कहा, 'उस आकृति से तुम किस को डराना चाहते हो?' मेरे प्रश्न से वह आदमी चौंक गया।

यह सामान्य दुःख की बात है कि आदमी दुष्टत्माओं के सामने चापलूसी करता है और काँपता है। उनको मंहगी भेंट चढ़ाकर और लम्बी तीर्थयात्रा करके उनके अनुमोदन पाना चाहता है।

मंत्र-तंत्र के ताबीज , शुभंकर चिह्न, संत कहलाये जाने वालों के अवशेष , इन सब पर

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

आजकल बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है। और यह सब आने वाली बुराई से बचने के लिए ! भारत देश के ज्योतिषियों , धार्मिक नीम हकीमों, और स्वघोषित गुरु इस व्यापार में व्यस्त हैं। लगता है कि सारी प्रेत बाधाओं और यातनाओं के लिए हर तरह का इलाज वे प्रस्तुत करते है। मंत्र और उसके प्रतिमंत्रों की कितनी अंधकारमय दुनिया में हम जी रहें है?

एक औरत ने मुझे लिखा था... अपने पति को उससे अलग करने के लिए किसी ने उस पर काले जादू का प्रयोग किया है। अपने पापों के लिए पश्चाताप करके वह यीशु के पास आई। हाँ , अब वह यीशु की तरफ आस लगा सकती है। अत्याचार सहने वाले और दलित और दीन लोगों के लिए यीशु कितना राहत और आशा लाते है!

जब आप यीशु के लहू के तले आते हो , तो हम कैसी अलग दुनिया में जीयेंगे। दुष्टात्मों ने आक्रमण करके, उनके द्वारा क्रूरता से सताये गये लोग कई रातें बिना नींद के गुजारते है। जब ऐसे लोग मेरे पास आते हैं तो इस कितने अद्भुत उद्धारकर्ता से मैं उनका परिचय करा सकता हूँ। जब प्रभु का भला हाथ उन पर आये , तो शैतान भाग जाता है और उन पर आराम का उदय होता है।

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता और कैसी शोभा होगी!'

प्रिय पाठको , अभी यीशु के अधीन हो जाओ। उनको बता दो कि आपको आक्रांत कर देने वाले कुरूप जीवन के विचारों को लेकर आप और आगे जी नहीं सकते। आप चाहते हो कि उस की खूबसूरती आप पर निक्षारित हो। उसकी भलाई आप पर हावी होकर , जिन्दगी की बाकी दौड़ में आपका मार्गदर्शन करेगी।

- जोशुआ दानिएल।

हमारे लिए एक बालक ... पृष्ठ 1 से

है कि एक मसीहा आयेगा। मगर लोगों ने विश्वास नहीं किया और इस बात पर ध्यान नहीं दिया। यह मानना मूर्खता है कि पाप राज कर रहा है और पाप का राज्य सविजय बना रहेगा। क्या आप विश्वास करोगे कि अंधकार रोशनी से बढ़कर सामर्थशाली है ? नहीं ! जब ज्योति प्रकाशित होती है तो अंधकार भाग जाता है। यीशु ने मृत्यु पर भी विजय पाई है।

कुछ पेड़ों की लकड़ी इंधन के रूप में ही इस्तेमाल कर सकते है। वे फल नहीं सकते। मगर मनुष्य को फलने के उद्देश्य से ही सृजा गया है। वह धन एकत्र न करें। साम्यवाद , सम्पत्तिवाद के विरुद्ध घमासान लड़ाई लड़ रहा है। 'क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी को सृजता हूँ; और पहली बातें स्मरण न की जाएंगी अथवा सोच-विचार में भी न आएंगी। ' (यशायाह 65:17) परमेश्वर कहते है कि उनका वचन प्रबल रहेगा। परमेश्वर के वचन पर शंका ना करो। उस चट्टान के खिलाफ मत दौड़ो। टकराने से आप टूट जाओगे। आप अपने लिए कई डिग्री और खिताब हासिल कर सकते हो और उसके साथ आत्मा में खालीपन। परमेश्वर के वचन पर विश्वास किये बिना क्या आप सोचते हो कि जिन्दगी में सफलता पाओगे ? नहीं! मेरी जवानी में, जिन लोगों ने मेरी प्रार्थना और मेरा बाइबल के प्रति चाहत का मज़ाक उड़ाया है , अब वे दुर्गति में है। परमेश्वर ने एक नई दुनिया के सृजन होने का आदेश दिया है। दुल्हा अपने आपको तैयार कर रहा है। तेल का इन्तजाम करना तुम्हारा काबू में है।

दुल्हे की पुकार मचेगी। उन्होंने नया आकाश और नई पृथ्वी की नींव, क्रूस पर बैठाई है। क्या आप उस चट्टान को आधार बना अपना निर्माण कर रहें हो ? परमेश्वर का राज्य आपके अंदर है। उस राज्य के लिए इधर-उधर मत ताकना। अगर हम दोहरे व्यक्तित्व रखने वाले है तो नरक हमारे अंदर जगह पायेगा। ...

गरीबी , कमी और वंचना से डरते है। महान आदमी इन से गुजरे है मगर उनसे बाहर , बदतर होकर कभी नहीं निकले है। सुशिक्षित लोगों के बीच में दुष्टता है। विद्यार्थी जब कॉलेज में प्रवेश करते है तो उस समय वे परमेश्वर पर विश्वास रखते है। मगर जब तक वे अपनी पढ़ाई पूरी करके कॉलेज छोड़ने वाले है , तब तक उनका विश्वास भ्रष्ट हो चुका होता है और उन में शान्ति नहीं रहती। विद्या हमें आनन्द नहीं दे सकती। अगर हम मसीह को ग्रहण नहीं करेंगे तो हम अधम स्थिति में रहेंगे। दुल्हे ने यह शर्त क्यों रखी कि कुंवारियाँ जलते दीपक ही लेकर क्यों आयें ? क्या आपके दीपक जल रहें है?

नया मन नई पृथ्वी का प्रारंभ है। नई पवित्रता , शुद्ध जीवन, नया संतोष , शान्ति और विश्वास! यह नई शक्तियाँ है जो आपके निस्वार्थ जीवन से निकल पड़ेंगी। दीपक जलने का यह अर्थ है। शान्ति सुधारती है और पुनः सृजन करती है। यह नया आकाश और नई पृथ्वी का आरम्भ है।

पास्टर हशी चीन में प्रभु के लिए सेवा कर रहे थे। एक दफा एक सभा में दो लोग आपस में बुरी तरह लड़ने लगे। एक आदमी ने दूसरे की तरफ चाकू फेंका। दूसरे आदमी की जांघ कट गई और खून बहने लगा। चारों तरफ लोगों ने चाकू फेंकने वाले आदमी को मारना चाहा। मगर

पास्टर ह्शी ने उनके बीच में कूद कर बुद्धिमानी की बाते करते घाव पर पट्टी बांधी। फिर शान्ति बहाल हुई।

झगड़ों के कारण लोग जल्दी मर जाते है। जब मसीह हमारे दिल में नहीं है तो जीभ तलवार में बदल जाती है। जब एक परिवार यीशु को जान जाता है , वे परमेश्वर के राज्य का निर्माण करेंगे। वे ऐसे बच्चों को पैदा करेंगे जो उठकर दुनिया को हिला देंगे। सुसन्ना और सैम्युल ह्वेस्ली ने जॉन ह्वेस्ली को पैदा किया जिसने इंग्लैण्ड को हिला दिया था। दुल्हे की पुकार मचने वाली है ! वह हड्सन टेलर, जॉन बन्यन और जॉन ह्वेस्ली के पास आया था!

कुछ लोग मन फिराये हो सकते है। मगर अपने दीपक को जलाये रखने के लिए क्या उनके पास तेल है? आप को तेल कहाँ से मिलेगा? यीशु के चरणों पर। वहाँ एकान्त में प्रार्थना करने और परमेश्वर के वचन का ध्यान करने जाओ। प्रमुखता की खोज में मत रहो। अगर आप परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हो तो जहाँ भी जाओ, आप लोगों पर शान्ति की महक फैलाओगे।

हमें मसीह के पास जाना है। उस चट्टान के खिलाफ मत जाओ। वो पुकार जल्दी मचने वाली है, 'देखो, दुल्हा आ रहा है !' अन्धकार में प्रकाशित होनेवाला विश्वास क्या आपके पास है? हमारे सर्वस्व की भेंट योग्य मसीह है। जो उन पर विश्वास रखते हैं उनको कोई घटी ना होगी। .... जो कमी मैं महसूस करता हूँ वह यही है कि मेरे पास पर्याप्त मात्रा में खुद मसीह नहीं है। मुझे और उनका आत्मा चाहिए। अगर आप और मैं उनकी तरह जीयें , लोगों को चंगा करने वाली और बैरियों से भी प्रेम करने का, पुनरुथान मसीह का सामर्थ हम में से प्रज्वलित होगा।

परमेश्वर चाहते है कि हम उनकी शान्ति और विश्वास से भरे रहें। हमारा जीवन दूसरों में विश्वास पैदा करेगा। ... दुल्हा पुकार रहा है ! क्या आपके दीपक में तेल है?

- एन. दानिय्येल।

गरम पानी की बोतल

बेलजयंन कांगो (अब का कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य) में एक रात, हेलेन रोजावियर नामक एक मसीही डॉक्टर प्रसव के वार्ड में गंभीर हालत में एक गर्भवती माँ की मदद कर रही थी। फिर भी दुःखद बात है कि वह मर गयी। और समय से पूर्व जन्मा एक शिशु और रोती दो साल की अपनी बेटी वह पीछे छोड़ गयी।

उस शिशु को जिन्दा कैसे रखा जाए ? वहाँ कोई इन्क्युबेटर (तापमान बनाए रखने वाली मशीन) या नवजात शिशुओं का देखभाल करने के लिए कोई विशेष सुविधा ना थी। और रात में तापमान बहुत कम होकर सर्दी तेज़ हो सकती है।

एक छात्र-मिडवाइफ (प्रसाविका-दाई) शिशु के लिए एक पेटी और रुई लाने गई। और दूसरी आग जलाकर गरम पानी की बोतल भरने गई। अचानक मुसीबत आ पड़ी। वह भागी-भागी हेलेन को बताने आई कि जब वह बोतल को भर रही थी तो बोतल अचानक फूट गई। 'और वह हमारी आखिरी गरम पानी की बोतल थी !' उसने कहा। तुरन्त एक बोतल का इन्तजाम करना आसान नहीं है। हेलेन ने सलाह दी कि उस शिशु को सुरक्षित दूरी पर आग के नजदीक रखें। 'दरवाजे और उस शिशु के बीच होकर उसे सोना है ताकि नवजात शिशु को ठंडी हवा ना लगे ,' उसने कहा, 'उस शिशु को गरम रखना तुम्हारी जिम्मेवारी है।'

अगले दिन, जैसे वह हमेशा करती थी , अनाथ बच्चे, जिनका मन होता उनके साथ मिलकर प्रार्थना करने गयी। उस शिशु के बारे में और उसको गरम रखने की समस्या और गरम पानी के बोतल की जरूरत के बारे में उसने जिक्र किया। अगर ठंड लगी तो वह बच्चा मर सकता है। उस दो साल की बच्ची के बारे में भी बताया जो अभी-अभी मरी अपनी माँ के लिए रो रहीं थी।

प्रार्थना के दौरान एक दस साल की बच्ची रूत ने बहुत साफ-साफ प्रार्थना की, जो इन बच्चों के बीच असाधारण बात नहीं थी। 'परमेश्वर कृपया ,' उसने प्रार्थना की, 'एक गरम पानी की बोतल भेज दो। कल आयी तो कोई फायदा नहीं है , परमेश्वर वह बच्चा मर जायेगा, इसलिए कृपया इस दोपहर को ही उसे भेजना ' हेलेन ने बाद में लिखा कि उस साहसी और स्पष्ट प्रार्थना को सुनकर वह कैसे अन्दर ही अन्दर सिसक उठी। फिर भी रूत की

सत्य की परख!

देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है , प्रभु मेरे प्राण का पोषक है। (भजन संहिता 54:4)

प्रार्थना अभी तक समाप्त नहीं हुई थी - 'जबकि आप यह कर रहें हो , इस नन्ही बच्ची के लिए एक गुडिया भी भेजना कि वह जान पाये, आप उसे सच में प्यार करते हो।'

हेलेन दुविधा में पड़ गई। क्या वह ईमानदारी से 'आमीन' (ऐसा ही हो) कह पायेगी? परमेश्वर के कार्यों की भी क्या एक हद नहीं होती है ? स्वदेश से एक पार्सल भेजने के जरिए ही परमेश्वर इस प्रार्थना का उत्तर दे सकते है। हालांकि अफ्रीका में बिताये इन चार सालों में घर से कभी एक भी पार्सल नहीं आया! और कौन गरम पानी की बोतल भेजेंगे - वो भी भूमध्य रेख पर, किसी देश में?!

उस दोपहर हेलेन को एक संदेश मिला कि उसके सामने के दरवाजे पर एक कार खड़ी है। उसके घर पहुँचने से पहले ही वह कार चली गई। मगर बरामदे में एक पार्सल था! हेलेन की आँखों में आँसू भर आये। अनाथालय के बच्चों को भी बुलावा भेजा ; जब सब लोगों ने मिलकर उस पार्सल को खोला, उनकी उत्सुकता बढ़ती गयी। उस बक्से में से पहले कुछ कपड़ों को निकाला (उसे बच्चों को दे दिया गया) फिर और कुछ सामान थे। फिर हाथ अंदर रखकर उसने कुछ स्पर्श किया ... क्या यह सच हो सकता है ? हाँ! 'बिलकुल निई रबड़ की गरम पानी की बोतल!' हेलेन चिल्लाई। उसने सच में विश्वास नहीं था कि परमेश्वर उसको भेजेंगे। रूत दौड़कर सामने आई: 'अगर परमेश्वर ने बोतल भेजी है, तो जरूर गुडिया भी भेजे होंगे!' उस बक्से के नि चले भाग से एक छोटी सी सुन्दर कपड़े पहिने गुडिया को निकाला। हेलेन की तरफ देखते रूत ने पूछा , 'इस गुडिया को उस नन्ही बच्ची को देने के लिए, माँ क्या मैं आपके साथ जा सकती हूँ ? ... ताकि वह जान पाये कि यीशु उससे सच में प्यार करते है।'

पाँच महीने पहले ही , हेलेन के पुराने सण्डे स्कूल क्लास के लिए उस पार्सल को भेजा गया था। पार्सल भेजने वाले पादरी ने परमेश्वर से प्रेरणा मि ली आज्ञा को मानकर उस गरम पानी की बोतल भी भेजा था। लड़कियों में से किसी एक ने किसी अफ्रीकी बच्ची के लिए एक गुड़िया भी रख दी थी। आठवीं सदी के नबी , यशायाह द्वारा लिखी गयी परमेश्वर की प्रतिज्ञा इस विषय में भी सच साबित हुई : 'तब ऐसा होगा कि उनके पुकारने से पहले ही मैं उत्तर दूंगा और उनके मांगते ही मैं सुन लूंगा।' (यशायाह 65:24)

(हेलेन रोजावियर का 'लिविंग फेत' देखे।)

स्वार्थ का अंत- मसीह

सन् 1908 , लंदन के उपनगर में रॉय का जन्म हुआ था। अपने पति की मृत्यु के बाद , उस औरत के अपनों मे से दो बेटों में से वह एक था। किशोर अवस्था में ही, बोर्डिंग स्कूल चैपल में उसका सामना 'धर्म' से हो गया था। और समय समय पर परमेश्वर की चेतना का अपने दिल को झकझोंरते महसूस करता था। मगर पापियों के लिए परमेश्वर के सुसमाचार के बारे में वह कुछ नहीं जानता था।

एक दिन रॉय को अपने चचेरे भाई से चिट्ठी मिली। उस पत्र में बहुत उत्सुकता के साथ यीशु मसीह के बारे में बात की गयी थी। और रॉय से , अपना जीवन उसे सौंपने का आग्रह किया गया था। रॉय हैरान हो गया और यह बात उसे घृणित भी लगी। परमेश्वर और मसीह को लेकर उत्साहित होना उसे असभ्य लगा ! नीरसता के अलावा परमेश्वर उसे और कुछ बेहतर देने वाले तो नहीं, ऐसा उसको लगा। और सिर्फ यही नहीं , रॉय अपने जीवन को अपनी मर्जी से भी जीना चाहता था।

उसके चचेरे भाई ने हार नहीं मानी। तथापि उसने रॉय को मिलिटरी नौजवान अफ्सरों के अवकाश शिविर में आने का न्योता दिया। उन में से कुछ लोग नये मसीही बने थे और कई अन्य भी उन छुट्टियों के दौरान मसीह की ओर फिरने वाले थे। रॉय को उस कार्यक्रम से घृणा हुई। और यीशु मसीह के साथ किसी भी तरह का नाता न रखने का निर्णय लिया। फिर स्कूल छोड़ने से पहले गर्मी में रॉय ने एक और ईसाई अवकाश शिविर में भाग लिया था। उसको लेकर वह बहुत डरा हुआ था। मगर परमेश्वर उसका पीछा कर रहे थे। वह कब्जे में आ ही गया और उसे भी नहीं पता था कि और कब तक वह प्रतिरोध कर पायेगा। फिर एक दिन , उपदेश सुनने के बाद , रॉय ने यीशु मसीह के क्रूस को देखा। अपने प्रति परमेश्वर के प्रेम को देखा। और परमेश्वर का रॉय के पापों को अपने पुत्र यीशु पर लादना देखा। रॉय का विरोध गायब हो गया। और उसने कहा : 'इस दुनिया में , मैं किसको लेकर डर रहा हूँ ? यह कार्य तो मेरे विरोधी का नहीं लगाता जो मेरे विरुद्ध है और जो मेरी जिन्दगी को बदतर बना दे!'

एक या दो रातों के बाद

की बात है। जब किसी ने , मसीह आदमी के दिल को खटखटाने के बारे में बात की थीं। और रॉय ने प्रार्थना की: 'हे प्रभु यीशु अगर अब से पहिले आप मेरे मन में नहीं आये तो अब आ जाओ। ' पहली बार परमेश्वर के साथ सुलह की शान्ति ने उसके दिल में प्रवेश किया।

अगले दिन , शिविर में दूसरे लोगों के सामने यह बात कबूल कर सारा मामला सुनिश्चित हो गया। 'प्रभु के लिए मैंने अपने मुँह को खोला है और अब मैं पीछे नहीं हट सकता।' - और ना ही वह ऐसा करना चाहता। परमेश्वर के आनंद से उसका मन भर गया। परमेश्वर के साथ आत्मीयता इतनी वास्तविक हो गई कि जब प्रार्थना करने अपने बिस्तर के बगल में घुटने टेकता, तो वहाँ से उठने का मन नहीं करता था।

स्वर्गीय चीजों के प्रति रॉय की भूख बढ़ गई ; जिन उपहारों और लालसाओं के पीछे हरेक भाग रहें थे उन चीज़ों ने अपने आकर्षण खो दिये थे। अंतत : महीनों के पश्चात उसके इलाके में हो रहे बाइबल अध्ययन में रॉय ने भाग लिया। हालाँकि वह सभा या वहाँ के उपदेशक कुछ खास नहीं थे , फिर भी वह संदेश मानो प्यासे आदमी के लिए शीतल जल के घूँट जैसा लगा।

मसीह को पहला स्थान देना।

रॉय के जीवन में यीशु मसीह से बढ़कर दो बातें ज्यादा महत्व रखतीं थीं, परमेश्वर को उन्हें मार गिराना होगा। वह थीं, तुरही बजाना और खेलकूद में उसकी रुचि। इन दोनो रुचियों का बहुत जोर से उनका पीछा करते रॉय को यह ऐहसास हो गया कि अगर यीशु को उसका सच्चा प्रभु बनाना है, तो उन दोनो से छुटकारा पाने की जरूरत है। ऐसे शौक़ रखना गलत तो नहीं है - मगर यीशु को तीसरे स्थान पर गिराने में वह गलती कर रहा है।

बाद में जिस लड़ाई का उसको सामना करना पड़ा , उसमें परमेश्वर ने बहुत दया के साथ रॉय को उसका भविष्य दिखाना शुरु किया। - उनकी सेवा में रॉय का भविष्य, आत्मा का बदलना , और परमेश्वर का राज्य दूर दराज के इलाकों तक व्यापित होना। परमेश्वर ने कहा; 'यह सब कुछ, आगे और भी अधिक है, अगर मेरे पैरों पर धूल में, अपने जीवन की महिमा को मृत तुल्य समझकर रखने के लिए तैयार हो तो!' उस खास रात में , रॉय ने 'इस से भी बढ़कर 'अपने' प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण सब बातों को तुच्छ ,' समझा। इस तरह आत्मसमर्पण करने के बाद इस्तीफे का पत्र लिख दिया। तत्पश्चात पवित्र आत्मा परमेश्वर रॉय का अभिषेक करता और जब वह वचन बोलता तो उसके वचनों को सामर्थ से भर देता। जिस मुँह से वह हकलाता था उसे अब यीशु ने चंगा किया।

स्वार्थ की जगह, मसीह।

दूसरे नौजवानों के साथ साथ रॉय भी उस बाइबल पाठ में मसीही जीवन के महत्वपूर्ण पाठ सीखता गया।

एक गर्मी के दिनों के शिविर, जिसमें अब रॉय सहायक बन पाया, उसने अपने दिल में इर्ष्या का पाप पाया। परमेश्वर ने अंततः उसको उस वचन पर लेकर गयेः 'मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। अब मैं जीवित नहीं रहा , परन्तु मसीह मुझ में जीवित है। ' (गलातियों 2:20) रॉय ने यह देखा कि उसकी असली समस्या 'मैं' यानि 'स्वार्थ' है - मगर इस वचन में सन्त पौलूस ने उस ऐतिहासिक सूली पर चढ़ाये जाने का जिक्र किया, जहाँ वह खुद मौजूद है। रॉय ने तब समझा : जिसके जीवन का केन्द्र स्वार्थ है , उसका न्याय कर उसको यीशु मसीह के साथ सूली पर चढ़ाया जाना आवश्यक है। इस तरह उसे अपने आप को खत्म होते हुए देखना है , ना की सि र्फ बदले हुए। उसे अपने स्वार्थ से संघर्ष नहीं करना। मगर सालों पहले जो "खुद" पर मौत की सजा सुनाई थी, उसे स्वीकार करना है। और उस सजा को धीरे-धीरे अपने जीवन में अमल करने का परमेश्वर पर भरोसा रखना है। रॉय को अपने बल और प्रयास से जीने की कोशिश बन्द करनी है। अब जीने के लिए नए जीवन का स्रोत जो प्रभु यीशु बने हैः 'अब मैं जीवित नहीं रहा , परन्तु मसीह मुझ में जीवित है।'

रॉय ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया कि अब उसके लिए अपना स्वार्थ क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है और उसके जीवन के सिंहासन पर यीशु विराजमान है। अब परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को अनुभव में लाने के लिए रॉय को मालूम था कि उसे विश्वास के साथ उस नए रिश्ते को निभाना है। उसने ऐसा ही किया ; मसीह उसका जीवन बन गया और वह परमेश्वर के आत्मा से भर गया।

रॉय एक प्रचारक बन गया और प्रभु यीशु मसीह के बारे में वह कई लोगों से बात करता।

यीशु का दुबारा अपने आपको प्रकट

करना।

रॉय के मसीही जीवन में ऐसा भी एक समय था जब उसका परमेश्वर के साथ संबंध बिगड़ गया था। फिर भी , यीशु ने पुनः अपने आप को उस पर प्रकट किया' (यूहन्ना 21:1 देखे) - पूर्वी अफ्रीका में सेवा कर रहें मसीहियों ने एक सम्मेलन का आयेजन किया था। रॉय ने उस में भाग लिया और उनके द्वारा दिए गया संदेश को सुनकर रॉय ने यह अनुभव किया था। उस सभा में पश्चाताप और यीशु मसीह के लहू पर जोर दिया गया था।

रॉय अपने व्यक्तिगत पापों से शुद्ध होने के लिए परमेश्वर से माफी माँगने लगा। हालाँकि वे बहुत छोटे दिखते थे - तनाव, फल स्वरूप अपनी पत्नी के साथ तीखेपन का व्यवहार। उसने कबूल किया कि वह कैन से बेहतर नहीं; कैन जो आदम और हव्वा का बेटा जो भूमि की उपज का भाग परमेश्वर को अर्पण के लिए लाया था; जो अपनी ताकत के कार्यों को दर्शाता है। जिस पल रॉय ने इसके लिए पश्चाताप किया उसी पल वह हाबिल बन गया। हाबिल, जो कैन का भाई है जिसने अपनी भेड़-बकरियों में से कुछ को परमेश्वर को भेंट चढ़ाया। वह अब एक मेमने का लहू लेकर परमेश्वर के सामना आया , यीशु का लहू के सिवाय और कुछ नहीं। और एक पापी के तहत परमेश्वर ने उसे स्वीकार किया। रॉय को कुछ मामलों में गलतियों को ठीक करना पड़ा। पैसों को लेकर हुए कुछ वाद-विवाद के बाद , एक मसीही भाई एक साल से उस से बात नहीं कर रहा था। परमेश्वर ने रॉय को यह दिखाया कि पहली गलती उसकी थी। हालाँकि रॉय का मत सही था , मगर जिस तरह से उसे लागू किया था वह गलत था। उसके लिए एक और रास्ता है , वह यीशु मसीह का मार्ग है जिससे वे एक मत हो जाते। रॉय को दुबारा यह सीखना पड़ा 'मैं नहीं मगर मसीह।'

जीवन केंद्र में यीशु।

पाँच साल के बाद , परमेश्वर ने रॉय को अध्यात्मिक जीवन में और उन्नति दी। और इस दफा वह अनुग्रह में आजादी का विषय था। एक सम्मेलन में , रॉय ने मसीही संजीवन के लिए 'यीशु को केंद्र बनाने' का महत्व सीखा। और उसके सिवाय कुछ नहीं है। ह्विलियम नगेन्ड़ा ने, जो एक अफ्रीकी भाई थे , इसको दर्शानेवाला एक सफेद स्टिकर अपने बाइबल पर चिपकाया हुआ था। सिर्फ यीशु में वो जीवन पाया जाता है जो मनुष्यों को आजाद करता है। - वही पहला महत्वपूर्ण कारण है जिसके पीछे-पीछे अन्य अच्छे फल आते है। यीशु वह एक मात्र है जिसके द्वारा पापियों के लिए अनुग्रह आया हैः 'क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई , पर अनुग्रह और सच्चाई तो यीशु मसीह के द्वारा पहुँची '। (यूहन्ना 1 :17) यह एक अद्भुत संदेश है जिसकी असीम संभावनायें है।

यीशु हर एक संघर्ष का अंत है।

(रॉय हेस्सॅन की 'मेरा कल्वरी मार्ग' किताब पढ़ें।)

सच्ची बुद्धि तथा ज्ञान का स्रोत - याकूब अध्याय 3 - पवित्र बाईबल....

13 तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है।

14 पर यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना।

15 यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है वरन सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है।

16 इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।

17 **पर जो ज्ञान ऊपर (परमेश्वर) से आता है वह पहिले तो <u>पवित्र</u> होता है फिर <u>मिलनसार</u>, <u>कोमल</u> और <u>मृदुभाव</u> और <u>दया</u>, और <u>अच्छे फलों</u> से लदा हुआ और <u>पक्षपात और कपट रहित</u> होता है।**

18 और मिलाप कराने वालों के लिये धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोया जाता है॥